ISSN 2277-923X
UGC List No. 78-42973

कोसल

KOSALA

(Refereed & International Journal)
of
The Indian Research Society of Avadh

Late Prof. Ashok Kumar Kaliya Commemoration Volume

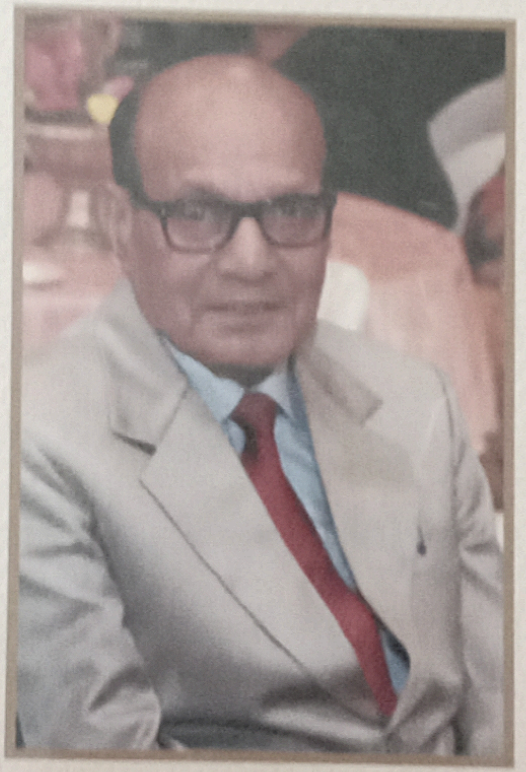

स्व. प्रो॰ अशोक कुमार कालिया स्मृति विशेषाङ्क

Volumes XXXV-XXXX
Jul. 2018-Jul. 2021

15. स्मृतियों के वातायन से — डॉ. रेखा शुक्ला, कानपुर — 40
16. श्रद्धाञ्जलिः — प्रो. कामेश्वरनाथमिश्रः, वाराणसी — 41
17. अथ मित्र कथा — श्री श्रीनारायण शुक्ल, लखनऊ — 42

C. लेख

1. रीतिपरम्परा के सैद्धान्तिक एवं व्यावहारिक विवर्त : एक समीक्षा — प्रो. अभिराज राजेन्द्र मिश्र, शिमला — 44
2. न्यायसार में वर्णित प्रमा, प्रमाता तथा प्रमेय — डॉ. कौशल कुमार पाण्डेय, लखनऊ — 51
3. ज्योतिषीय दृष्टि से वृष्टिविज्ञान — डॉ. चन्द्रश्री पाण्डेय, लखनऊ — 57
4. आचार्ययास्ककृत वैदिकछन्दोविमर्श — प्रो. मानसिंह, रुड़की — 62
5. वैदिक साहित्य में देवता-विमर्श — डॉ. दानपति तिवारी, अयोध्या — 70
6. श्रीमद्भगवद्गीता में सद्भाव — डॉ. संजय कुमार, सागर — 73
7. विवाह संस्कार का महत्त्व — डॉ. रंजना सिन्हा, उन्नाव — 78
8. काव्यास्वाद एवं आचार्य अभिनवगुप्त — प्रो. दीप्ति शर्मा त्रिपाठी, दिल्ली — 83
9. वैष्णवनये भक्तिरसवैविध्यम् — प्रो. एस. चन्द्रशेखर, लखनऊ — 89
10. भारतीयदर्शनेषु कर्मवादः — प्रो. कृष्णकान्तशर्मा, वाराणसी — 91
11. प्रो. गोविन्दचन्द्र पाण्डे कृत "भागीरथी" काव्य में समसामधिकभाव — डॉ. गीता त्रिपाठी, सुलतानपुर — 96
12. वैदिक वाक्-तत्त्व एवं उसका कलात्मक प्रतिबिम्बन अर्द्धनारीश्वर — प्रो. युगलकिशोर मिश्र, वाराणसी — 100
13. नाट्य में धनञ्जय सम्मत मूल रस - एक विवेचन — प्रो. मंजुला जायसवाल, प्रयागराज — 104
14. वाक्काव्यं न तु शब्दार्थौ — प्रो. रहसबिहारी द्विवेदी, जबलपुर — 106
15. शङ्करदिग्विजय में अद्वैतप्रतिष्ठा तथा उसका प्रयोजन — डॉ. नवलता, कानपुर — 110
16. सामाजिक शिष्टाचार विषयक धर्मसूत्रकारों के अनुचिन्तन — डॉ. ऋतेश त्रिपाठी, प्रयागराज — 115
17. साम्प्रतिक समाज का दर्पण 'निर्याति नैव स्मृतिः' : प्रो. ओमप्रकाश पाण्डेय — अनुपम देवी, लखनऊ — 118
18. भारतीय संस्कृति के माङ्गलिक प्रतीक तथा संस्कृत साहित्य — प्रो० प्रीति सिन्हा, लखनऊ — 122
19. अकर्मण्यता के दोष व कर्मयोग (गीता के परिप्रेक्ष्य में) — डॉ. बालकृष्ण त्रिपाठी, लखनऊ — 127
20 Concept of Mukti in Kashmir Śaivism — Prof. Radhavallabh Tripathi — 130

श्रीमद्भगवद्गीता में सद्भाव

- डॉ. संजय कुमार*

श्रीमद्भगवद्गीता का उपनिषद् एवं ब्रह्मसूत्र के साथ प्रस्थानत्रयी में महत्त्वपूर्ण स्थान है। कुरुक्षेत्र की युद्ध भूमि में ५००० वर्ष पूर्व भगवान् श्रीकृष्ण ने जो अर्जुन को उपदेश दिये थे वही श्रीमद्भगवद्गीता के रूप में प्रसिद्ध है। यह महाभारत के भीष्मपर्व से सम्बन्धित है जिसमें १८ अधयाय और ७०० श्लोक हैं।

यदि हम सद्भावना या असद्भावना की सामान्य बात करें तो अच्छी भावना या बुरी भावना की ओर हमारी दृष्टि जाती है। लेकिन 'श्रीमद्भगवद्गीता' के आलोक में सद्भावना और असद्भावना का अर्थ सत्य और असत्य व्यक्त होता है। 'श्रीमद्भगवद्गीता' सद्भाव और असद् भाव के मध्य की उपज है। द्यूतक्रीड़ा, द्रौपदी-वस्त्रहरण, लाक्षागृह यह सब असद्भाव का प्रतीक हैं। युद्ध क्षेत्र में स्वजनों को देखकर अर्जुन के मन में उत्पन्न हुआ मोह असद् भावना है। वह शरीर को सद् समझता है जो नश्वर है। उसी को अर्जुन शाश्वत समझने लगता है। उसी अज्ञान, भ्रम, मोह, असद्भाव को समाप्त करने के लिए श्रीकृष्ण 'श्रीमद्भगवद्गीता' का उपदेश देते हैं। सद् ही शाश्वत है। उसी की प्रतिष्ठा युगों-युगों में हुई है। जिसे स्पष्ट करते हुए 'श्रीमद्भगवद्गीता' में कहा गया है-

नासतो विद्यते भावो नाभावो विद्यते सतः। उभयोरपि दृष्टोऽन्तस्त्वनयोस्तत्त्वदर्शिभिः।। (२.१६)

अर्थात् असत् वस्तु की सत्ता नहीं है और सत् का अभाव नहीं है। इस प्रकार दोनों ही तत्त्व तत्त्वज्ञानीपुरुषों के द्वारा देखा गया है। यहाँ दोनों तत्त्व के देखने की बात की जा रही है लेकिन असत् सदैव अभाव रूप में ही रहता है। उसके अभाव का ही सम्यक् बोध तत्त्वज्ञानियों को होता है। भाव तो केवल सद् है। वही चिन्तनीय है, वही वस्तु है, वही ऋत है। यह सद्भावना नाशरहित है। सम्पूर्ण जगत् इसी में व्याप्त है। यही आत्मा है। असद्भावना तो शरीर है जिसका नाश निश्चित है। आत्मा रूप सद्भावना तो नाशरहित है, जिसको प्रकाशित करते हुए कहा गया है-

न जायते म्रियते वा कदाचिन्नायं भूत्वा भविता वा न भूयः।
अजो नित्यः शाश्वतोऽयं पुराणो न हन्यते हन्यमाने शरीरे।। (२.२०)

अर्थात् यह आत्मा किसी काल में भी न तो जन्मता है और न मरता ही है। तथा न यह उत्पन्न होकर फिर होने वाला है क्योंकि यह अजन्मा, नित्य, सनातन और पुरातन है। शरीर के मारे जाने पर भी यह नहीं मारा जाता है। इस आत्मा को सिद्ध करने के लिए अनेक तर्क और उदाहरण भी 'श्रीमद्भगवद्गीता' में दिये जाते हैं। यहाँ आत्मा की इतनी व्याख्या करने का उद्देश्य केवल अनात्म का निराकरण और आत्मा की प्रतिष्ठा है। पूरा का पूरा महाभारत काल अनात्म भाव की गहरी खाई में जा दबा था जहाँ से भीष्म और द्रोण भी नहीं निकल पाये। विदुर उस खाई से निकलते हुए दिखाई देते हैं लेकिन उन्हें सुनने वाला कौन था? इसलिए कृष्ण आत्मा को व्यावहारिक धारातल पर प्रस्तुत करते हैं-

वासांसि जीर्णानि यथा विहाय नवानि गृह्णाति नरोऽपराणि।
तथा शरीराणि विहाय जीर्णान्यन्यानि संयाति नवानि देही।। (२.२२)

अर्थात् जैसे मनुष्य पुराने वस्त्रों को त्यागकर दूसरे नये वस्त्रों को ग्रहण करता है, वैसे ही जीवात्मा पुराने शरीर को त्यागकर

*सहायक-आचार्य, संस्कृत विभाग, डॉ. हरीसिंह गौर विश्वविद्यालय, सागर (म.प्र.) ४७०००३ मो. ०८६८६७१३६६७
Email- drkumarsanjaybhu@gmail.com